3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

वन के दीप

● अंकुर श्री श्रीमाल

बच्चो, अपने घरों में तो हम दीए अथवा विद्युत बल्बों से उजाला करके दीवाली मना लेते हैं लेकिन जंगल में अपनी जलती बुझती रोशनी से दीवाली करते रहने का प्रबंध भी प्राकृतिक ही है। वन के ये दीप हैं जुगनू। अपने शरीर से रोशनी पैदा करने वाले चालीस से अधिक जीव जंतुओं में अधिकांश जीव पानी में रहने वाले होते हैं। जुगनू गोबरेला कीड़ा वर्ग का होता है और उड़ने वाला जीव होता है।

जुगनू के शरीर से निकलने वाली रोशनी ठंडी होती है – गर्म नहीं। अर्थात इसे हाथ से उठाया जाए तो गर्म नहीं लगेगा। जुगनू वर्षा ऋतु में अधिक दिखाई देते हैं। इस कीड़े का रंग स्लेटी भूरे रंग का होता है। इसकी आंखें बड़ी–बड़ी होती हैं। मादा जुगनू के पर नहीं होते, नर जुगनू के होते हैं। हमारे देश में जुगनुओं की लंबाई लगभग आधा इंच होती है। वैसे सामान्यत: जुगनू की एक जाति ऐसी भी है जो सिर और दुम दो जगह से रोशनी देता है। सिर से लाल और दुम से हरी –पीली रोशनी देने वाला यह जुगनू दक्षिण अमेरिका में पाया जाता है। इसके सिर की तरफ रोशनी पहले चमकती है फिर दुम की तरफ।

''पायरो फोरस'' जाति का जुगनू सबसे अधिक रोशनी देता है। साइबेरिया में भी एक जुगनू अधिक रोशनी देने वाला पाया जाता है तो उत्तर अमरीका में एक नर जुगनू भी रोशनी देने वाला होता है।

धरती पर कुछ गर्म देश के निवासी तो जुगनुओं से अपने घर में रोशनी करते हैं। वे सूर्यास्त के बाद कुछ जुगनुओं को पकड़ कर एक पिंजरे में डाल लेते हैं।

कुछ आदिवासी जातियों के लोग इन्हें पिंजरे में डाल कर रात में साथ ले जाते हैं ताकि जंगल में रास्ता देख सकें। इन की स्त्रियां इन्हें बालों में भी सजा लेती हैं।

जुगनू रोशनी शरीर के पिछले भाग से देता है। वैज्ञानिकों ने इसकी दुम के इस तरह चमकने का कारण एक रासायनिक तत्व को माना है। यह तत्व है 'ल्यूसीफेरिन' इस रसायन व जुगनू के रक्त के संयोग से यह चमक पैदा होती है। यह तत्व मादा जुगनू में अधिक होता है। नर जुगनू मादा की चमक देख कर उसके पीछे–पीछे चलता रहता है। नर जुगनू में रोशनी

प्राणी जगत

चमकने और बंद होने का समय लगभग दो सेकण्ड होता है और मादा में यह समय छ: सेकन्ड।

जुगनुओं की अलग–अलग जातियोंमें रोशनी की चमक का समय भी अलग–अलग होता है। यह मांसाहारी कीड़ा अपना शिकार बहुत विचित्र तरीके से करता है। इसके भी मूंछें होती हैं। अपनी मूंछों के बालों को यह शिकार के शरीर पर धीरे–धीरे घुमाता है और एक प्रकार का जहर छोड़ता जाता है। थोड़ी देर में वह जीव निर्जीव–सा होने लगता है। इसके छोड़े जहर का हिस्सा भी एक तरह के रस में बदल जाता है। यह रस ही जुगनू का भोजन होता है।

जुगनुओं को तेज रोशनी रास नहीं आती है। तेज रोशनी में ये जीवित नहीं रह पाते। जुगनुओं के अंडों में से १५ दिन में ही बच्चे निकल आते हैं। मादा, अंडे प्राय: घास पर ही देती है।

जुगनू दलदल, नमी व पानी के आस–पास अधिक रहता है ताकि छोटे–मोटे कीड़ों को आसानी से भोजन बना सके। एक जाति की मादा जुगनू कई बार दूसरी जाति के जुगनू को अपनी चमक से पास बुला लेती है और फिर चतुराई से उसे अपना भोजन बना लेती है।

जुगनू की लगभग दो हजार जातियां धरती पर पाई जाती हैं।

● भवानीमण्डी (राज.)